तपती गर्मी जरूरी है देखभाल

हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 26 April - 02 May 2026

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

अनुक्रमणिका

तपती धरती, झुलसते लोग	पंकज चतुर्वेदी	04
हीट डोम से बढ़ता धरती का तापमान	प्रमोद भार्गव	06
लू, तपिश और जीवन का संतुलन	मुकेश गुप्ता	08
गर्मी में ऐसा हो स्टाइलिश परिधान...	अनु बाफना	11
कॉर्पोरेट जिहाद: क्या कार्यस्थल सुरक्षित है?	सोनम लववंशी	13
पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव	आशीष कुमार 'अंशु'	15
वर्तमान में परिसीमन विधेयक की आवश्यकता	अभिषेक सूर्येश	18
नवाचार के साथ विवेक भी आवश्यक	डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी	20
मल्लखम्ब: बच्चों को सशक्त बनाती प्राचीन कला	संकलन	22
भारतीय कला पुरोधा राजा रवि वर्मा	मनोज कुमार बच्चन	24
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का वैश्विक संदेश	लवकुश तिवारी	26
पहलवान से पार्श्वगायक तक मन्ना डे की कहानी	संकलन	28
समाचार	-	29

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

तपती धरती, झुलसते लोग

यदि हमने आज अपनी जीवनशैली और विकास के मॉडल पर पुनर्विचार नहीं किया तो आने वाली पीढ़ियों के लिए यह धरती रहने योग्य नहीं बचेगी। यह समय केवल घरों में वातानुकूलित यंत्र चलाकर स्वयं को सुरक्षित समझने का नहीं बल्कि सामूहिक रूप से धरती को बचाने का है।

संकट

पंकज चतुर्वेदी

अप्रैल का महीना अभी आधा ही गुजरा कि भारत के बड़े हिस्से में सूरज की तपिश ने मई-जून जैसी स्थिति पैदा कर दी है। समाचार पत्रों की सुर्खियों और मौसम विभाग की हालिया चेतावनियों पर गौर करें तो एक डरावनी तस्वीर सामने आती है- दुनिया के 20 सबसे गर्म शहरों में से 19 अकेले भारत के हैं। यह महज एक मौसमी बदलाव नहीं बल्कि एक गम्भीर पर्यावरणीय चेतावनी है जिसे अनदेखा करना आत्मघाती सिद्ध हो सकता है। भले ही इस मौसम के भयावह होने के कुछ वैश्विक कारण है, किंतु बहुत सी स्थानीय लापरवाहियां भी हैं जिसने धरती को लपटों से घिरा गोला बना दिया है।

सामान्य शब्दों में जब किसी क्षेत्र का तापमान उसके औसत तापमान से बहुत अधिक हो जाता है और यह स्थिति कई दिनों तक बनी रहती है तो उसे 'तपिश की लहर' या 'लू' कहा जाता है। मैदानी क्षेत्रों में जब पारा 40 डिग्री सेल्सियस को पार कर जाता है और तटीय क्षेत्रों में 37 डिग्री से ऊपर पहुंचता है, तब इसे खतरे की घंटी माना जाता है।

यह गर्मी सिर्फ पसीना नहीं बहाती बल्कि शरीर के तापमान नियंत्रण तंत्र को विफल कर देती है, जिससे लू लगना और शरीर में पानी की घातक कमी जैसी स्थितियां पैदा होती हैं। वर्तमान में भारत के कई शहरों, विशेषकर बिहार, ओडिशा और बंगाल में पारा 44 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा है, जो जनजीवन के लिए अत्यंत कष्टकारी है।

लू केवल बढ़ता हुआ तापमान नहीं है बल्कि यह एक जटिल वायुमंडलीय घटना है। इसके पीछे के वैज्ञानिक कारणों को समझना अनिवार्य है। वैज्ञानिक दृष्टि से, लू तब चलती है जब वायुमंडल के ऊपरी हिस्सों में उच्च वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है। यह उच्च दाब ऊपर की हवा को नीचे की ओर धकेलता है। जैसे-जैसे हवा नीचे आती है, वह संकुचित होती है और ऊष्मा गतिकी के नियमों के अनुसार और अधिक गर्म हो जाती है। यह गर्म हवा जमीन के पास एक 'ढक्कन' की तरह फंस जाती है, जिसे वैज्ञानिक 'हीट डोम' कहते हैं। भारत के संदर्भ में थार मरुस्थल और बलूचिस्तान की ओर से आने वाली हवाएं 'एडियाबेटिक हीटिंग' का परिणाम होती हैं। जब हवा ऊंचे क्षेत्रों से नीचे के मैदानी क्षेत्रों की ओर बहती है तो दबाव बढ़ने के कारण उसका तापमान स्वतः बढ़ जाता है चूंकि इन हवाओं में नमी शून्य के बराबर होती है, इसलिए ये त्वचा को झुलसाने वाली 'लू' में बदल जाती हैं।

पृथ्वी के चारों ओर बहने वाली तीव्र हवाएं, जिन्हें 'जेट स्ट्रीम' कहा जाता है, मौसम को नियंत्रित करती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण इनकी गति धीमी पड़ गई है, जिससे गर्म हवा के गुब्बारे एक ही स्थान पर कई दिनों तक स्थिर हो जाते हैं।

भारत में इस भीषण गर्मी के पीछे प्राकृतिक और मानव-जनित परिस्थितियों का एक

घातक मिश्रण है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस वर्ष 'अल नीनो' का प्रभाव अपने चरम पर है। प्रशांत महासागर के पानी का असामान्य रूप से गर्म होना पूरी दुनिया के मौसम चक्र को बिगाड़ देता है। ऐतिहासिक आंकड़े बताते हैं कि 1877 के बाद अब फिर से एक महा 'अल नीनो' सक्रिय है, जिसने लगभग 150 वर्ष पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इसके साथ ही, इस वर्ष 'मानसून-पूर्व' वर्षा की भारी कमी देखी गई है। सामाान्य तौर पर अप्रैल में होने वाली हल्की बूंदाबांदी जमीन को ठंडा रखती है, किंतु इस बार आसमान साफ होने के कारण सूरज की किरणें बिना किसी रुकावट के सीधे धरती को झुलसा रही हैं।

विशेषज्ञों का स्पष्ट मानना है कि गर्मी की इस बढ़ती आवृत्ति का सीधा सम्बंध वैश्विक तापमान में हो रही वृद्धि से है। 1981 से 2020 के बीच भारत का औसत तापमान लगभग 1 डिग्री बढ़ चुका है। ध्यान देना होगा कि भारत में शहरीकरण बढ़ रहा है। तभी पहले लू का प्रभाव केवल गंगा के मैदानी क्षेत्रों तक सीमित था, पर अब इसका दायरा बढ़कर 18.1 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैल गया है। शहर यानी पक्की सड़के, आलीशान भवन और कंक्रीट और डामर की सड़कें प्राकृतिक मिट्टी की तुलना में कई गुना अधिक गर्मी अवशोषित करती हैं। रात के समय जब ग्रामीण क्षेत्र ठंडे होने लगते हैं, शहर की ये इमारतें अपनी जमा की हुई गर्मी को छोड़ती रहती हैं। इसे 'अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट' कहा जाता है, जिसके कारण शहरों का तापमान आसपास के गांवों से 5 से 7 डिग्री सेल्सियस तक अधिक बना रहता है।

हालिया शोध बताते हैं कि अब केवल दिन ही नहीं बल्कि रातें भी सामान्य से अधिक गर्म हो रही हैं। जब रातें ठंडी नहीं होतीं तो मानव शरीर को पिछले दिन की गर्मी से उबरने का समय नहीं मिल पाता। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले वर्षों में लू के दिनों की संख्या में भारी बढ़ोतरी होगी। पहले वर्ष में औसतन 2 से 5 दिन लू चलती थी, जो अब बढ़कर 8 से 9 दिन तक पहुंच गई है। अल नीनो की इस सक्रियता के कारण भविष्य में मानसून के कमजोर पड़ने का भी संकट है।

इस भीषण संकट से निपटने के लिए हमें तात्कालिक और दीर्घकालिक दोनों स्तरों पर काम करना होगा। प्रशासन को अब 'ग्रीष्मकालीन कार्ययोजना' को अनिवार्य रूप से लागू करना होगा, जिसमें पेयजल की उपलब्धता और मजदूरों की सुरक्षा सर्वोपरि हो। साथ ही शहरों में बढ़ते कंक्रीट के जंगलों के बीच 'हरित पट्टियों' और जलाशयों का पुनरुद्धार करना होगा।

यह तय है कि जिस तरह से मौसम का स्वभाव बदल रहा है उसके कारण मौसम का अनियमित और चरम स्वरूप, तापमान में वृद्धि को झेलना ही है। ध्यातव्य है कि जिन क्षेत्रों में लू से मृत्यु हो रही हैं, वहां गंगा और अन्य विशाल जल निधियों का जाल है। इसके बाद भी वहां लू की मार है। एक तो इन क्षेत्रों में हरियाली कम हो रही है, दूसरा तालाब, छोटी नदियां, सरिता जैसी जल निधियां या तो उथली हैं या फिर लुप्त हो गई है। समाचारपत्र के पन्नों पर छप रही ये चेतावनियां केवल सूचनाएं नहीं हैं बल्कि प्रकृति की ओर से दिया गया 'अंतिम अलर्ट' हैं। ●●●

हीट डोम से बढ़ता धरती का तापमान

दक्षिण महासागर कार्बन डाइऑक्साइड से लबालब हो गया है। परिणामत: अब यह समुद्र इसे अवशोषित करने की बजाए वायुमंडल में ही उगलने लग गया है। यदि इसे जल्दी नियंत्रित नहीं किया गया तो वायुमंडल का तापमान तेजी से बढ़ेगा, जो न केवल मानव प्रजाति बल्कि सभी प्रकार के जीव-जंतुओं के अस्तित्व के लिए घातक होगा।

चेतावनी

प्रमोद भार्गव

देश के कई राज्यों में वायुमंडल में अंगड़ाई ले रहीं गर्म हवाओं ने अप्रैल माह में ही तापमान 40 डिग्री के पार पहुंचा दिया है। मौसम की जानकारी देने वाली निजी एजेंसी स्काई मेट के अनुसार इसका मुख्य कारण केवल सामान्य मौसमी बदलाव न होकर वह उष्मा का बन जाने वाला छतरीनुमा गोला है, जो आधे भारत के राज्यों में मंडरा रहा है। इस समय दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और तेलांगाना में गर्मी एकाएक बढ़ गई है। इस प्राकृतिक स्थिति को उष्मा का क्षत्रप (हीट डोम) या गुंबद कहा जा रहा है। धूप और लू के इस जानलेवा संयोग से जब कोई व्यक्ति पीड़ित हो जाता हैं तो गम्भीरता से उपचार करना अतिआवश्यक हो जाता है क्योंकि लू सीधे दिमागी गर्मी को बढ़ा देती है। अतएव इसे समय रहते ठंडा नहीं किया तो यह बिगड़ा अनुपात व्यक्ति को बौरा (पागल) भी कर सकता है। वैसे शरीर में प्राकृतिक रूप से तापमान को नियंत्रित करने का काम मस्तिष्क में 'हाइपोथैलेमस' अर्थात 'अधष्चेतक' क्षेत्र करता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य पियूश ग्रंथी के माध्यम से तंत्रिका तंत्र को अंतःस्रावी प्रक्रिया के माध्यम से तापमान को संतुलित बनाए रखना होता है। इसे चिकित्साशास्त्र की भाषा में हाइपर-पीरेक्सिया कहते हैं। यानी शरीर के तापमान में असमान वृद्धि या अधिकतम बुखार का बढ़ जाना। इसकी चपेट में बच्चे और बुजुर्ग आसानी से आ जाते हैं। बाहरी तापमान जब शरीर के भीतरी तापमान को बढ़ा देता है तो हाइपोथैलेमस तापमान को संतुलित बनाए रखने का काम नहीं कर पाता। परिणामत: शरीर के भीतर बढ़ गई अनावश्यक गर्मी बाहर नहीं निकल पाती है, जो शरीर में लू का कारण बन जाती है। इस स्थिति में शरीर में कई जगह

प्रोटीन जमने लगता है और शरीर के कई अंग एक साथ निष्क्रियता की स्थिति में आने लग जाते हैं। ऐसा शरीर में पानी की कमी यानी डी-हाईड्रेशन के कारण भी होता है। दोनों ही स्थितियां जानलेवा होती है। इस स्थिति के निर्माण हो जाने पर बुखार उतारने वाली साधारण गोलियां काम नहीं करती हैं क्योंकि ये दवाएं दिमाग में मौजूद हाइपोथैलेमस को ही अपने प्रभाव में लेकर तापमान को नियंत्रित करती हैं, जबकि लू में यह स्वयं शिथिल होने लग जाता है।

हवाएं गर्म या आवारा हो जाने का प्रमुख कारण ऋतुचक्र का उलटफेर और भूतापीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) का औसत से ज्यादा बढ़ना है। इसीलिए वैज्ञानिक दावा कर रहे हैं कि इस बार प्रलय धरती से नहीं आकाशीय गर्मी से आएगी। जिस आकाश को हम निरीह और खोखला मानते हैं, परंतु वास्तव में यह खोखला है नहीं। भारतीय दर्शन में इसे पांचवां तत्व यूं ही नहीं माना गया है। सच्चाई यह है कि यदि परमात्मा ने आकाश तत्व की उत्पत्ति नहीं की होती तो सम्भवतः आज हमारा अस्तित्व ही नहीं होता। हम श्वास भी नहीं ले पाते। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चारों तत्व आकाश से ऊर्जा लेकर ही क्रियाशील रहते हैं। ये सभी तत्व परस्पर परावलम्बी हैं। यानी किसी एक तत्व का अस्तित्व क्षीण होगा तो अन्य को भी छीजने की इसी अवस्था से गुजरना होगा। प्रत्येक प्राणी के शरीर में आंतरिक स्फूर्ति एवं प्रसन्नता की अनुभूति आकाश तत्व से ही सम्भव होती है, इसलिए इसे बह्मतत्व भी कहा गया है। अतएव प्रकृति के संरक्षण के लिए सुख के भौतिकवादी उपकरणों से मुक्ति की आवश्यकता है क्योंकि हम देख रहे हैं कि कुछ एकाधिकारवादी देश भूमंडलीकरण का मुखौटा लगाकर ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से दुनिया की छत यानी ओजोन परत में छेद को चौड़ा करने में लगे हैं। यह छेद जितना विस्तृत होगा वैश्विक तापमान उसी अनुपात में अनियंत्रित व असंतुलित होगा। इस बढ़े तापमान का प्रभाव जिन-जिन क्षेत्रों में पड़ेगा, वहां खेत बंजर हो जाएंगे। पालतू मवेशी और वनजीव गर्मी से तड़प-तड़प कर प्राण छोड़ने लग जाएंगे, जो मानव समुदाय अभावग्रस्त हैं, उन पर गर्म हवाओं का यह दबाव कहर बनकर टूटेगा और यह जानलेवा भी होगा। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2020 में किए गए एक अध्ययन से स्पष्ट हुआ था कि जलवायु परिवर्तन और पानी का अटूट सम्बंध है। इस रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया को 2030 तक बाढ़ों की कीमत प्रत्येक वर्ष चुकानी पड़ेगी। इनसे करीब सालाना 15.6 लाख करोड़ की हानि उठानी पड़ सकती है। साफ है, वैश्विक तापमान के बढ़ते संकट ने आम आदमी के दरवाजे पर दस्तक दे दी है। दुनिया में कहीं भी एकाएक बारिश, बाढ़, बर्फबारी, फिर सूखे का कहर यही संकेत दे रहे हैं। आंधी, तूफान और फिर यकायक ज्वालामुखियों के फटने की हैरतअंगेज घटनाएं भी यही संकेत दे रही हैं कि अदृश्य संकट आसपास ही कहीं मंडरा रहे हैं। समुद्र और अंटार्कटिका जैसे बर्फीले क्षेत्र भी इस बदलाव के संकट से दो-चार हो रहे हैं।

वास्तव में वायुमंडल में अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड महासागरों में भी अवशोषित होकर गहरे समुद्र में बैठ जाती है। यह वर्षों तक जमा रहती है। पिछली दो शताब्दियों में 525 अरब टन कचरा महासागरों में विलय हुआ है। इसके इतर मानवजनित गतिविधियों से उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड का 50 प्रतिशत भाग भी समुद्र की गहराइयों में समा गया है। इस अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड के जमा होने के कारण अंटार्कटिका के चारों ओर फैले दक्षिण महासागर में इस कार्बन डाइऑक्साइड को सोखने की क्षमता निरंतर कम हो रही है। इस स्थिति का निर्माण घातक है।

मुकेश गुप्ता

तपती धूप, लू और उमस भरी हवाओं के कारण गर्मी का मौसम, शरीर के लिए चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जिससे डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक और उल्टी-दस्त जैसी कई बीमारियां जन्म लेती हैं। हालांकि सही आदतों और समय रहते सतर्कता बरतकर हम गर्मी से होने वाली बीमारियों से बच सकते हैं।

लू, तपिश और जीवन का संतुलन

गर्मी का मौसम आते ही तपती धूप, लू और उमस भरी हवाएं शरीर को थका देती हैं। अत्यधिक गर्मी से न केवल आम दिनचर्या प्रभावित होती है बल्कि यह कई गम्भीर बीमारियों को भी जन्म देती है। ऐसे में समय रहते बचाव और उचित उपचार आवश्यक हो जाता है।

गर्मी से होने वाली सामान्य बीमारियां

गर्मी में लू (हीट स्ट्रोक), पानी की कमी (डिहाइड्रेशन), उल्टी-दस्त, पित्ती, फोड़े-फुंसी, आंखों में जलन और हीट रैशेज जैसी समस्याएं आम हैं। लू लगने पर अत्यधिक प्यास, सिर दर्द, चक्कर, उल्टी और बेहोशी तक हो सकती है। वहीं डिहाइड्रेशन से शरीर सुस्त, थका और कमजोर महसूस करता है।

बचाव के उपाय

पर्याप्त पानी पिएं: गर्मी में शरीर में पानी की कमी सबसे बड़ा संकट है। दिन में कम से कम 8-10 गिलास पानी पीना चाहिए। सादे पानी के अलावा छाछ, नींबू पानी, नारियल पानी, शिकंजी और लस्सी भी लाभदायक हैं। अल्कोहल और कैफीन युक्त पेय पदार्थों से बचें क्योंकि वे शरीर में पानी की कमी को बढ़ाते हैं।

उचित कपड़े पहनें: सूती, ढीले और हल्के रंग के कपड़े पहनें। गहरे रंग के कपड़े गर्मी अधिक सोखते हैं। सिर को ढकने के लिए टोपी, छाता या रुमाल का उपयोग करें। धूप के चश्मे से आंखों को यूवी किरणों से बचाएं।

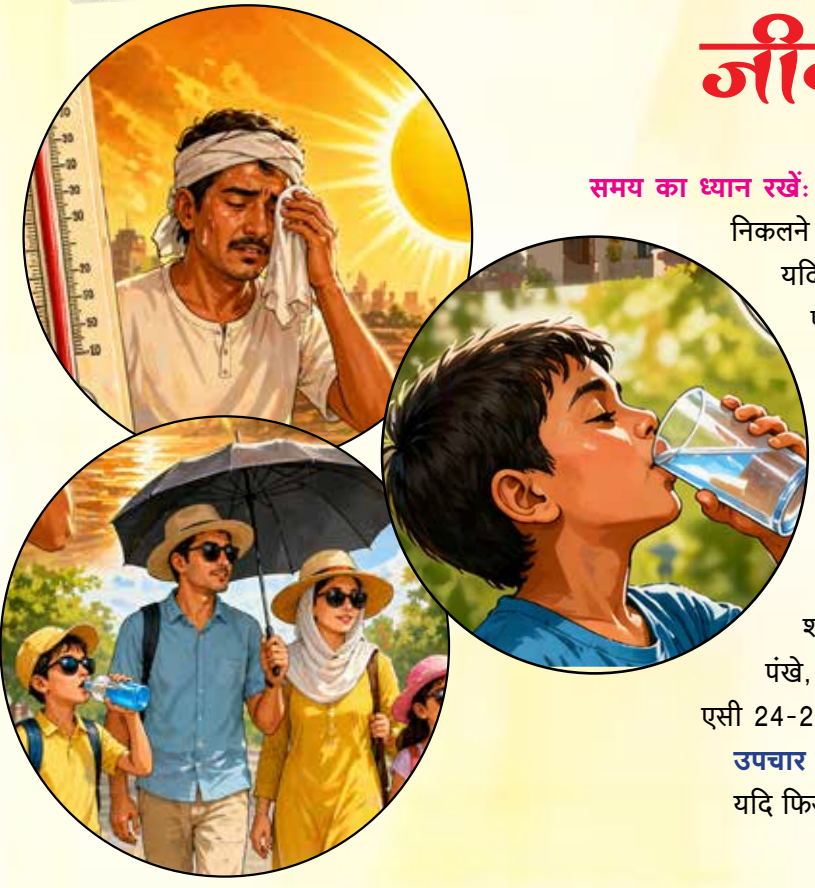

समय का ध्यान रखें: दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे के बीच घर से बाहर निकलने से बचें। इस समय सूर्य की किरणें सबसे तीखी होती हैं। यदि आवश्यक हो तभी बाहर जाएं, वरना छायादार स्थानों पर रहें।

आहार में बदलाव करें: गर्मी में हल्का, सुपाच्य और तरल पदार्थ युक्त भोजन लें। तरबूज, खीरा, संतरा, मौसमी, आम (सीमित मात्रा में), लौकी, तोरई, पुदीना आदि खूब खाएं। मसालेदार, तली-भुनी, अधिक तेल वाली और बासी चीजों से परहेज करें।

घर को ठंडा रखें: घर के खिड़की-दरवाजे सुबह-शाम खोलें ताकि हवा आ-जा सके। दिन में पर्दे बंद रखें। पंखे, कूलर या एसी का उपयोग करें। बिजली बचाने के लिए एसी 24-26 डिग्री सेल्सियस पर सेट करें।

उपचार के तरीके

यदि फिर भी गर्मी से कोई समस्या हो जाए तो तुरंत ये उपाय करें:

लू लगने पर: व्यक्ति को तुरंत छांव या ठंडी जगह पर लिटाएं। सिर और गर्दन पर ठंडे पानी की पट्टी रखें। ठंडा पानी या ओआरएस का घोल पिलाएं। शरीर का तापमान सामान्य करने के लिए गीले कपड़े से पोंछें। यदि बेहोशी या तेज बुखार हो तो तुरंत डॉक्टर के पास ले जाएं।

डिहाइड्रेशन पर: घर पर बना ओआरएस (छह चम्मच चीनी + आधा चम्मच नमक + एक लीटर पानी) पिलाएं। नारियल पानी, चावल का मांड, नींबू पानी भी लाभदायक है। यदि हालत गम्भीर हो तो सलाइन या ड्रिप के लिए अस्पताल ले जाएं।

उल्टी-दस्त में: मरीज को तरल पदार्थ देते रहें। हल्का खिचड़ी, दलिया, सेब का जूस दें। डॉक्टर की सलाह से दवा लें। बिना डॉक्टर के एंटीबायोटिक्स न लें।

त्वचा सम्बंधी समस्याएं (फोड़े, घमौरियां): ठंडे पानी से स्नान करें। बाजार की क्रीम की बजाए मुल्तानी मिट्टी, एलोवेरा जेल या बोरोपाउडर का प्रयोग करें। त्वचा को सूखा और साफ रखें।

अतिरिक्त सावधानियां

* बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और पुरानी बीमारियों (हृदय, मधुमेह, बीपी) से पीड़ित लोगों का विशेष ध्यान रखें।
* बाहर का खाना, सड़क किनारे के जूस, गोल-गप्पे, कटे फल खाने से बचें। इससे फूड प्वाइजनिंग हो सकती है।
* ज्यादा ठंडा या फ्रिज से निकला पानी एकदम से न पिएं। इससे गले में खराश और बुखार हो सकता है।
* नियमित हल्का व्यायाम करें, परंतु दिन की तेज धूप में न करें। सुबह या शाम का समय अच्छा रहता है।
* मच्छरों से बचें क्योंकि गर्मी में डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया का संकट बढ़ जाता है। मच्छरदानी और रिपेलेंट का प्रयोग करें।

गर्मी से बचाव के लिए संयम और सतर्कता आवश्यक है। हम छोटी-छोटी आदतों में बदलाव करके, सही आहार और पर्याप्त पानी से इस मौसम का आनंद भी ले सकते हैं और बीमारियों से भी बच सकते हैं। याद रखें - 'पहले बचाव, फिर उपचार' यदि लक्षण गम्भीर हों तो घरेलू नुस्खों में समय बर्बाद न करें और तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें। गर्मी से डरें नहीं बल्कि समझदारी से सामना करें। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

पितांबरी® ॲग्रो टूरिजम

चलो घूमने दुनिया की सैर करने!

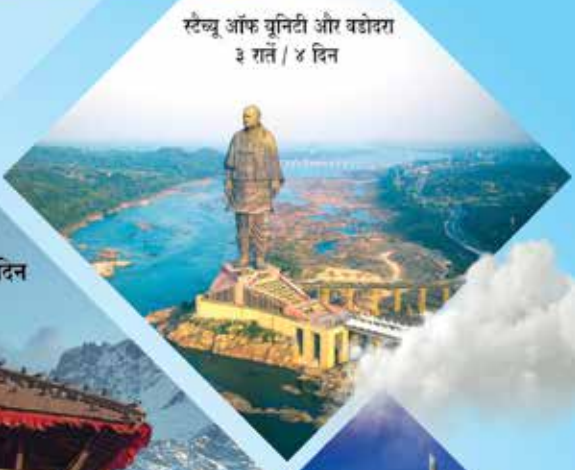

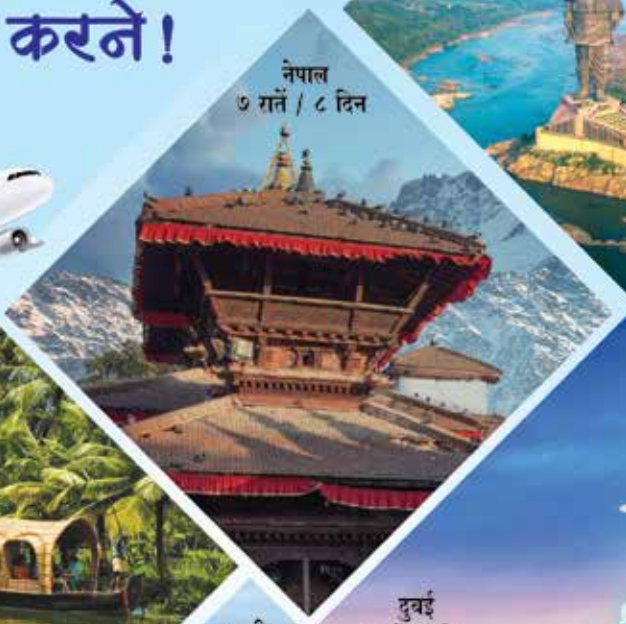

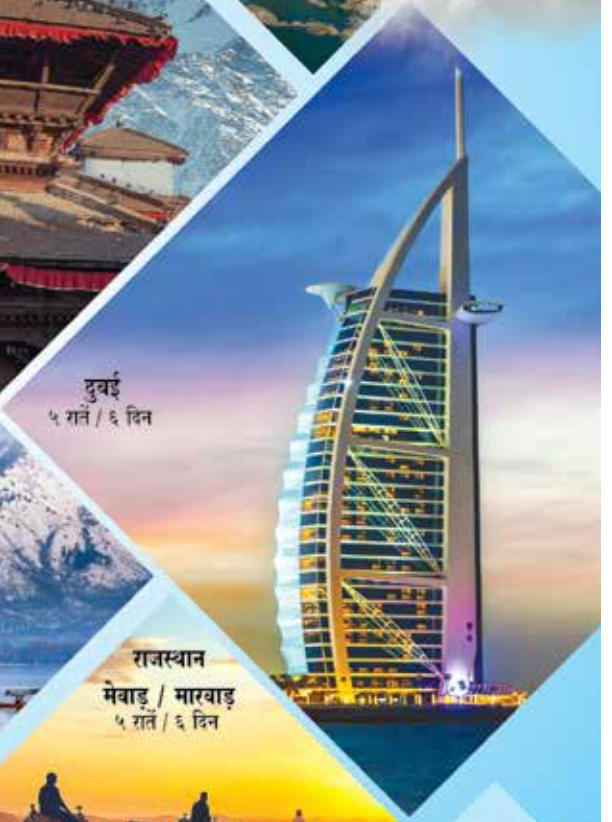

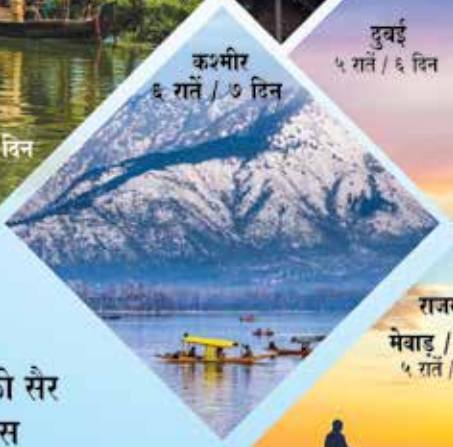

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी में सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क :
8828913131, 8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352

अनु बाफना

गर्मी में ऐसा हो स्टाइलिश परिधान...

गर्मी का मौसम चुनौतीपूर्ण अवश्य है, पर सही परिधान के चुनाव से इसे आरामदायक और स्टाइलिश भी बनाया जा सकता है। सूती और लिनन कपड़े, हल्के रंग, ढीला-फिट और पूरे शरीर को ढकने वाले वस्त्र- ये चार सिद्धांत आपको और आपके परिवार को इस गर्मी में स्वस्थ रखेंगे।

बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग का परिणाम कह लें या कुछ और, पर हर वर्ष ग्रीष्म ऋतु का पारा मानो हर वर्ष ऊपर ही चला जा रहा है। ग्रीष्म ऋतु अपने साथ चिलचिलाती धूप, उमस और भीषण गर्मी लेकर आती है। ऐसे में स्वयं को तरोताजा रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है। खान-पान से लेकर पहनावे तक हर उस पहलू का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक होता है जिससे शरीर और दिमाग का तापमान संतुलित रखा जा सके।

आज हम बात करेंगे सही परिधान की-

सही परिधान का चुनाव न केवल आपको आरामदायक होता है बल्कि आपको स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं जैसे लू, सनबर्न और डिहाइड्रेशन से भी बचाता है।

गर्मियों में परिधान चुनते समय सबसे पहले कपड़े की प्रकृति पर ध्यान देना चाहिए। बचपन से सुनते आए हैं कि सूती (कॉटन) कपड़े गर्मियों के लिए सर्वश्रेष्ठ होते हैं क्योंकि ये पसीना सोखते हैं और हवा पास होने में भी आसानी होती है, जिससे शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है।

चलिए समझें कि कौन से कपड़े ग्रीष्म ऋतु में उपयुक्त होते हैं:

खादी- भारत की परम्परा से जुड़ा एवं गर्मी में बेहद आरामदायक।

लिनन - हल्का और ठंडा, लम्बे समय तक ताजगी देता है, दिखने में भी सुंदर लगता है।

बांस का कपड़ा- हालांकि इसका उपयोग काम होता है और लोगों को जानकारी भी कम है, पर यह कपड़ा पर्यावरण के अनुकूल होता है और नमी सोखने में सक्षम।

नायलॉन, पॉलिएस्टर और सिंथेटिक कपड़ों से बचें- ये गर्मी को शरीर के पास रोकते हैं।

गर्मी के मौसम में भी कैसे लगे फैशन का तड़का?

अब सूती कपड़े पहनने का यह अर्थ नहीं है कि आप एकदम ही सादे लगो और फैशन एकदम ही त्याग दो। वर्तमान समय में फैशनेबल होना बड़ा ही आसान हो गया है- नित नए ब्रांड्स आ रहे हैं, उनमें से बहुत से ब्रांड्स लो-बजट वाले हैं जहां ठीक ठाक प्रिंट्स वाले कपड़े सही दाम में मिल जाते हैं, जो आरामदायक होने के साथ-साथ स्टाइलिश भी है और डिमांड-सप्लाई के खेल के चलते डील्स पर डील्स भी चल रही होती हैं। अपनी जेब के अनुसार सही ब्रांड चुनकर, मनभावन रंगों और डिजाइनों का चुनाव करके आप गर्मी में भी बेहद खूबसूरत दिखाई दे सकते हैं।

रंगों का चुनाव

गर्मियों में हल्के और पेस्टल रंग जैसे सफेद, क्रीम, आसमानी नीला, बेबी पिंक, मिंट ग्रीन, लैवेंडर और पीला बेहद लोकप्रिय हैं। ये रंग सूर्य की किरणों को परावर्तित करते हैं और शरीर को ठंडा रखने में सहायता करते हैं। वहीं गहरे रंग जैसे काला और गहरा नीला गर्मी को अवशोषित करते हैं, इसलिए इन्हें धूप में पहनने से बचना चाहिए और इतने गाढ़े रंग गर्मियों में आंखों को चुभने भी लगते हैं।

लू और चिलचिलाती गर्मी से बचाव के परिधान

भारत में मई-जून के महीनों में लू (क्शरीं थरींश) का प्रकोप बहुत तीव्र हो जाता है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में तापमान 48 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर चला जाता है। ऐसे में सही परिधान जीवन रक्षक का काम कर सकता है।

लू से बचाव के विशेष परिधान सुझाव

- **सूती दुपट्टा या स्कार्फ-** सिर, गर्दन और कान को ढकें।
- **पूरी आस्तीन की सूती शर्ट-** बाजुओं को धूप से बचाए।
- **पैरों को ढकने वाली पतलून-** सूती या लिनन की हल्की पैंट।
- **आंखों के लिए UV सुरक्षित चश्मा-** तेज धूप से आंखें बचाने हेतु।
- **सूती मोजे-** यदि बंद जूते पहनने हों तो पसीने को सोखने के लिए।
- **हाथों के लिए सूती दस्ताने-** बाइक चलाते समय या धूप में काम करते समय।

ट्रेंडी गर्मी फैशन

- **फ्लोरल प्रिंट-** गर्मियों का क्लासिक और हमेशा ट्रेंडी लुक- स्त्री पुरुष दोनों पर ही सुंदर लगता है।
- **ब्लॉक प्रिंट कुर्ती और सलवार-** भारतीय परम्परा और आधुनिकता का मेल।
- **लूज पैलाजो और कुर्ता सेट/हैंडलूम साड़ी-** ऑफिस और कैजुअल दोनों के लिए परफेक्ट।
- **इवन टोन-** ऑफिस के हिसाब से हलके रंग के लिनन या सूती शर्ट्स बड़े ही जानदार लगते हैं।
- **एम्ब्रॉयडरी और मिरर वर्क-** फैशन में चार चांद लगा देते हैं।

बच्चों के परिधान

बच्चों की त्वचा बड़ों की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशील होती है। गर्मियों में छोटे बच्चों को लू, घमौरियां और स्किन रैशेज की समस्या जल्दी होती है। इसलिए उनके परिधान का चुनाव करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

बच्चों के कपड़ों में ध्यान देने योग्य बातें

- **100% सूती कपड़े-** बच्चों की नाजुक त्वचा के लिए सबसे उपयुक्त।
- **ढीले-ढाले कपड़े-** शरीर को हवा मिलती रहे और पसीना न रुके।
- **हल्के रंग-** सफेद, हल्का पीला, हल्का गुलाबी और नीला।
- **बिना कठोर सिलाई और जिपर वाले कपड़े-** जिससे त्वचा पर रगड़ न लगे।
- **बाहर खेलते समय फुल स्लीव और टोपी-** धूप से सुरक्षा के लिए
- **सैंडल और चप्पल -** बंद जूतों की बजाए हवादार फुटवेयर पहनाएं।

शिशुओं (0-2 वर्ष) के लिए सूती जैम्पर, नैप्पी कवर और हल्की मलमल की चादरें सबसे उपयुक्त हैं। स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए हल्के सूती यूनिफॉर्म और टिफिन पोंछने वाला अतिरिक्त कपड़ा हमेशा साथ रखें।

केवल स्लीवलेस नहीं, पूरा ढका हो शरीर

एक बड़ी भ्रांति यह है कि गर्मी में जितना कम कपड़ा पहना जाए, उतनी कम गर्मी लगती है। यह धारणा पूरी तरह से गलत है। वैज्ञानिक शोध और हमारे पूर्वजों का अनुभव दोनों यही बताते हैं कि गर्मी में शरीर को ढककर रखना अधिक लाभदायक होता है। चाहे आप कार्यालय या बाजार जा रहे हों अथवा घर पर हों- अपने परिधान का चयन सोच-समझकर करें क्योंकि जब परिधान सही हो तो गर्मी भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ग्रीष्म ऋतु में स्वस्थ रहें, सुंदर रहें। ●●●

कॉर्पोरेट जिहाद
क्या कार्यस्थल सुरक्षित है?

नासिक की हालिया घटना से उजागर हुआ कॉर्पोरेट जिहाद, यह केवल एक संस्था की विफलता नहीं बल्कि उस पूरे कॉर्पोरेट नैरेटिव पर प्रश्नचिह्न है, जिसमें सुरक्षा को अनुभव नहीं प्रदर्शन बना दिया गया है। भारत में 2013 का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम एक सुदृढ़ और व्यापक ढांचा प्रस्तुत करता है। आंतरिक शिकायत समितियों का गठन, समयबद्ध जांच प्रक्रिया और जवाबदेही की स्पष्ट व्यवस्था ये सभी तत्व मिलकर एक आदर्श कार्यस्थल की परिकल्पना करते हैं। इस ढांचे में न्याय सुलभ दिखता है, संवेदनशीलता सुनिश्चित प्रतीत होती है और गरिमा संरक्षित दिखाई देती है, किंतु वास्तविकता इस आदर्श से दूरी बनाए हुए हैं। नियमों की उपस्थिति और न्याय की उपलब्धता के बीच एक मौन अंतराल बना रहता है, इसी अंतराल में अविश्वास जन्म लेता है और व्यवस्था की विश्वसनीयता धीरे-धीरे क्षीण होने लगती है।

कॉर्पोरेट रिपोर्टों और ईएसजी प्रकटीकरणों में सामने आ रहे आंकड़े इस अविश्वास को और ठोस आधार देते हैं। बड़ी कम्पनियों में यौन उत्पीड़न से जुड़ी शिकायतों का बढ़ना केवल संख्यात्मक परिवर्तन नहीं है, यह संस्थागत संरचना के भीतर चल रहे तनाव का संकेत है। शिकायतों की संख्या का बढ़ना यह दर्शाता है कि या तो घटनाएं अधिक हो रही हैं या फिर अब उन्हें दबाए रखना सम्भव नहीं रह गया है। दोनों ही स्थितियां उस कॉर्पोरेट छवि को चुनौती देती हैं, जो स्वयं को सुरक्षित और उत्तरदाई बताने में अग्रणी रही है। आंकड़े यहां दर्पण बन जाते हैं साफ, कठोर और असहज। स्थिति तब और जटिल हो जाती है, जब आंकड़ों की पारदर्शिता ही संदिग्ध हो। राष्ट्रीय स्तर पर कार्यस्थल-विशिष्ट उत्पीड़न का कोई स्पष्ट और सुसंगत डेटा उपलब्ध नहीं है। अपराध दर्ज होते हैं, पर उनके संदर्भ धुंधले रहते हैं। यह धुंधलापन केवल प्रशासनिक कमी नहीं बल्कि एक गहरी सामाजिक चुप्पी का संकेत है। अधूरी जानकारी समस्या को सीमित रूप में प्रस्तुत करती है और सीमित समझ समाधान को भी सीमित बना देती है। इस तरह एक अदृश्य संकट धीरे-धीरे सामान्यीकृत होता जाता है। मी-टू आंदोलन ने एक समय इस मौन को तोड़ा था और यह स्थापित किया था कि समस्या व्यक्तिगत सीमाओं से कहीं आगे जाकर संस्थागत ढांचों में जड़ें जमा चुकी है। इस आंदोलन ने अनेक शक्तिशाली पदों पर बैठे लोगों को कठघरे में खड़ा किया और यह संकेत

चुनौती

सोनम लववंशी

यह सर्वविदित है कि जिहादी मानसिकता से ग्रसित मुस्लिम युवा जहां भी कार्यरत है, कमोबेश वहां वे अपने दीन का पालन कर रहे हैं अर्थात अपने हिस्से का जिहाद कर रहे हैं, ऐसे में कॉर्पोरेट स्थल हो या कहीं और, सभी नागरिकों को इनसे सचेत व जागरूक रहना होगा।

दिया कि कोई भी व्यवस्था आलोचना से परे नहीं है।

नासिक की घटना इसी परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण संकेत बनकर सामने आती है। यह घटना केवल आरोप या घटना तक सीमित नहीं है, यह उस प्रतिक्रिया तंत्र का परीक्षण है, जो किसी भी संस्था की वास्तविक विश्वसनीयता तय करता है। नीति का अस्तित्व महत्वपूर्ण है, उसकी नीयत और क्रियान्वयन उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जब संस्थान अपनी प्राथमिकता छवि को बचाने में लगाते हैं, तब न्याय की प्रक्रिया स्वतः ही संदिग्ध हो जाती है। आज भारतीय कॉर्पोरेट जगत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां तकनीकी उन्नति और नैतिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन बनाना अनिवार्य हो गया है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में सुरक्षा और संवेदनशीलता केवल आंतरिक मूल्य नहीं बल्कि ब्रांड पहचान का हिस्सा बन चुके हैं। इस स्थिति में यदि सुरक्षा केवल प्रस्तुति बनकर रह जाए और संस्कृति में उसका प्रतिबिम्ब न दिखे तो हर दावा धीरे-धीरे अपनी विश्वसनीयता खो देता है। शून्य सहनशीलता जैसे वाक्य आकर्षक लगते हैं, पर उनका वास्तविक अर्थ केवल व्यवहार में ही सिद्ध होता है।

समाधान की दिशा स्पष्ट दिखाई देती है, किंतु उसका क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण है। आंतरिक शिकायत समितियों को वास्तविक स्वतंत्रता देना, जांच प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाना और नेतृत्व स्तर पर स्पष्ट जवाबदेही सुनिश्चित करना ये सभी आवश्यक कदम हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण एक ऐसी कार्य-संस्कृति का निर्माण है, जहां शिकायत को विद्रोह नहीं, अधिकार के रूप में देखा जाए। सुरक्षा एक स्थिर उपलब्धि नहीं है, यह एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे प्रत्येक दिन पुनः स्थापित करना पड़ता है। अंततः प्रश्न सरल प्रतीत होता है, उत्तर जटिल बन जाता है क्या कॉर्पोरेट कार्यस्थल वास्तव में सुरक्षित हैं या सुरक्षा केवल एक सुसंगठित आभास है? यह प्रश्न केवल नासिक की घटना तक सीमित नहीं है, यह पूरे कॉर्पोरेट ढांचे की विश्वसनीयता से जुड़ा हुआ है। नासिक की घटना एक दर्पण है स्पष्ट, कठोर और असहज। इस दर्पण में केवल एक संस्था का चेहरा नहीं बल्कि एक पूरी कार्य-संस्कृति का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जो संस्थान अपने दर्पण से बचते हैं, वे अंततः अपनी ही छवि से पराजित होते हैं। कांच की दीवारें पारदर्शिता का प्रतीक मानी जाती हैं। जब पारदर्शिता केवल दृश्य तक सीमित रह जाए और भीतर सन्नाटा पनपने लगे, तब वही दीवारें एक परिष्कृत पर्दा बन जाती हैं। उस पर्दे के पीछे जो छिपा रहता है, वही किसी भी संस्था की वास्तविकता को परिभाषित करता है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

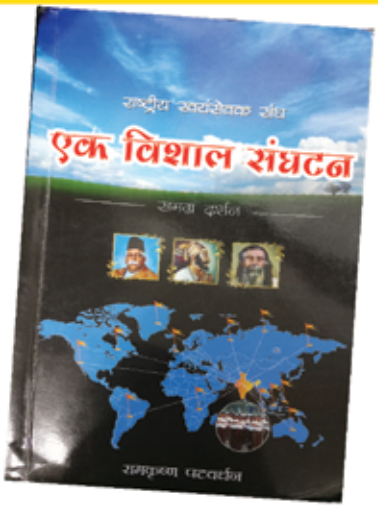

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव

सम्भावना

आशीष कुमार 'अंशु'

4 मई को परिणाम घोषित होंगे। असम में भाजपा की हैट्रिक, पुदुचेरी में गठबंधन की निरंतरता, केरल और तमिलनाडु में बढ़ती उपस्थिति तथा बंगाल में कड़ा मुकाबला सम्भव है। लोग वर्तमान सरकारों पर विश्वास जताएंगे या सत्ता परिवर्तन होगा, यह मतदाता तय करेंगे।

24 अप्रैल 2026 को लिखा गया यह लेख उन पांच राज्यों- असम, केरल, पुदुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल- के विधानसभा चुनावों पर केंद्रित है, जिनकी प्रक्रिया चल रही है या हाल ही में सम्पन्न हुई है। निर्वाचन आयोग ने इन चुनावों और छह राज्यों के उपचुनावों के लिए 1,111 केंद्रीय पर्यवेक्षकों की तैनाती की है, जिसमें 557 सामान्य, 188 पुलिस और 366 व्यय पर्यवेक्षक शामिल हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने स्पष्ट कहा कि चुनाव हिंसा-मुक्त और प्रलोभन-मुक्त होंगे ताकि हर मतदाता बिना भय के वोट डाल सके। पर्यवेक्षक पहले ही अपने क्षेत्रों में पहुंच चुके हैं।

असम, केरल और पुदुचेरी में 9 अप्रैल को एक चरण में मतदान हुआ, जबकि तमिलनाडु में 23 अप्रैल को एक चरण में। पश्चिम बंगाल में दो चरणों (23 और 29 अप्रैल) में मतदान हो रहा है। उपचुनाव भी इन तारीखों पर हुए। सभी वोटों की गिनती 4 मई 2026 को होगी। 29 अप्रैल शाम को एग्जिट पोल जारी होंगे, पर चुनाव आयोग ने 29 अप्रैल शाम 6:30 बजे तक एग्जिट पोल पर प्रतिबंध लगाया है।

ये चुनाव केंद्र में भाजपा नीत सरकार के बावजूद हर राज्य को अलग-अलग महत्वपूर्ण मानकर लड़े जा रहे हैं। भाजपा हर चुनाव को 'सबसे महत्वपूर्ण' बताकर लड़ती है, जो उसकी रणनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है। देश के अन्य राजनीतिक दल भाजपा से चुनाव प्रबंधन, बूथ स्तर की तैयारी और मुद्दा-आधारित अभियान सिख सकते हैं।

पश्चिम बंगालः भाजपा की स्थिति में सुधार और चुनौतीपूर्ण मुकाबला

पश्चिम बंगाल इन चुनावों का सबसे चर्चित राज्य है, जहां तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की ममता बनर्जी चौथी बार सत्ता बनाए

रखने का प्रयास कर रही हैं। 2021 में भाजपा ने 77 सीटें जीती थीं (2016 की तीन सीटों से भारी उछाल), पर बहुमत से काफी पीछे रही। 2026 में भाजपा ने अपनी स्थिति काफी सुधारी है। अमित शाह ने राज्य में डेरा डालकर 170 सीटों का लक्ष्य रखा है।

भाजपा की सफलता का आधार दोहरी रणनीति है

सुवेंदु अधिकारी जैसे स्थानीय चेहरों के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदुत्व और पहचान की राजनीति, जबकि समीक भट्टाचार्य जैसे नेताओं के माध्यम से शहरी क्षेत्रों में विकास और शासन की बात। पार्टी ने भ्रष्टाचार, कानून-व्यवस्था, बेरोजगारी और सीमा सुरक्षा जैसे मुद्दों पर फोकस किया। टीएमसी पर केंद्र योजनाओं को रोकने और स्थानीय स्तर पर हिंसा-भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए। बूथ स्तर की सटीक तैयारी, वेलफेयर स्कीम्स का प्रचार और एंटी-इनकंबेंसी को भुनाने का प्रयास भाजपा की ताकत बनी।

ममता बनर्जी ने भाजपा को बाहरी बताकर क्षेत्रीय अस्मिता का कार्ड खेला, परंतु भाजपा ने इसे राष्ट्रवाद और विकास से जोड़कर काउंटर किया। बंगाल की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए भाजपा ने राष्ट्रीय कथा को स्थानीय मुद्दों से जोड़ा। यदि भाजपा 130-150 सीटों के आसपास पहुंचती है (स्थानीय सट्टा बाजार के अनुसार) तो यह उसकी बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। टीएमसी के लिए सत्ता बचाना चुनौतीपूर्ण है, पर मुस्लिम वोट का समीकरण और वेलफेयर राजनीति उसके पक्ष में हैं।

बंगाल में भाजपा की प्रगति दिखाती है कि राज्य स्तर पर निरंतर संघर्ष और रणनीतिक अनुकूलन से स्थिति बदली जा सकती है।

असमः भाजपा की हैट्रिक की उम्मीद और स्थिरता

असम में 9 अप्रैल को रिकॉर्ड 85% से अधिक मतदान हुआ। भाजपा नीत गठबंधन 2016 से सत्ता में है और हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में हैट्रिक की मजबूत दावेदार है। पार्टी ने हिंदुत्व, वेलफेयर और विकास को मिलाकर रणनीति अपनाई। अवैध घुसपैठ, सीमा सुरक्षा और स्थानीय विकास जैसे मुद्दे काम आए। केंद्र की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन असम में भाजपा की ताकत रहा।

भाजपा यहां हर चुनाव को निर्णायक मानकर लड़ती है- बूथ स्तर पर संगठन, स्थानीय नेताओं को महत्व और मुस्लिम-गैर मुस्लिम ध्रुवीकरण का संतुलित प्रबंधन। यह रणनीति अन्य दलों के लिए उदाहरण है कि क्षेत्रीय मुद्दों को राष्ट्रीय एजेंडे से कैसे जोड़ा जाए।

केरलः भाजपा की बढ़ती उपस्थिति और भविष्य की नींव

केरल में भी 9 अप्रैल को उच्च मतदान (78% के आसपास) दर्ज किया गया। यहां लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) और यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) के बीच पारम्परिक मुकाबला है। भाजपा का वोट शेयर पिछले वर्षों में बढ़ा है (2011 के 5% से 2024 लोकसभा में करीब 20% तक)। हालांकि सत्ता की सम्भावना कम है, परंतु पार्टी ने त्रिकोणीय मुकाबले में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

भाजपा की रणनीति-सामाजिक न्याय, विकास और हिंदुत्व को दक्षिण भारतीय संदर्भ में ढालना- यहां काम कर रही है। राज्य में अलग अभियान चलाकर पार्टी नई जमीन तैयार कर रही है। केरल जैसे राज्य में निरंतर प्रयास से भाजपा एक सफल राष्ट्रीय पार्टी बन रही है।

तमिलनाडुः क्षेत्रीय दलों के बीच भाजपा की पैठ बढ़ाने का प्रयास

तमिलनाडु में 23 अप्रैल को मतदान हुआ। यहां डीएमके (एमके स्टालिन) सत्ता में है, जबकि एआईएडीएमके भाजपा के साथ गठबंधन में है। द्रविड़ राजनीति, भाषाई अस्मिता और सामाजिक न्याय के मुद्दे हावी हैं। भाजपा ने क्षेत्रीय सहयोगियों के जरिए पैठ बढ़ाने की रणनीति अपनाई।

केंद्र में होने के बावजूद भाजपा हर राज्य चुनाव को स्वतंत्र महत्व देती है- स्थानीय मुद्दों पर फोकस, गठबंधन प्रबंधन और बूथ मैनेजमेंट। यदि भाजपा गठबंधन को मजबूत करती है तो दक्षिण में उपस्थिति बढ़ेगी। यह अन्य दलों को सिखाता है कि गठबंधन और मुद्दा-आधारित राजनीति कैसे सफल होती है।

पुदुचेरीः छोटा, परंतु महत्वपूर्ण मैदान

पुदुचेरी (30 सीटें) में भी 9 अप्रैल को उच्च मतदान हुआ। भाजपा नीत गठबंधन यहां सत्ता में है। केंद्र की योजनाओं, विकास और वेलफेयर पर फोकस पार्टी की रणनीति रहा। छोटे राज्य में भी हर चुनाव को गम्भीरता से लड़ना भाजपा की विशेषता है।

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत यह है कि केंद्र में सरकार होने के बावजूद वह हर राज्य चुनाव को सबसे महत्वपूर्ण मानकर लड़ती है। बूथ स्तर की तैयारी, डेटा-आधारित रणनीति, स्थानीय नेतृत्व को बढ़ावा, मुद्दों का संतुलन और निरंतर अभियान- ये तत्व उसे सफल बनाते हैं।

चाहे परिणाम कुछ भी हों, भाजपा की रणनीतिक परिपक्वता अन्य दलों के लिए उदाहरण है। 4 मई को जनता का निर्णय अंतिम होगा, परंतु प्रक्रिया ने एक बार फिर सिद्ध किया कि लोकतंत्र में निरंतर संघर्ष ही सफलता की कुंजी है। ●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

वर्तमान में परिसीमन विधेयक की आवश्यकता

अभिषेक सूर्येश

भारत में परिसीमन जनसंख्या के बदलते वितरण के अनुरूप लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण हेतु आवश्यक है। विगत दशकों में जनसंख्या प्रवास व घनत्व के असमान विकास ने इसकी प्रासंगिकता को बढ़ा दिया है। इसलिए समावेशी विकास के लिए यह एक अनिवार्य लोकतांत्रिक कवायद है।

संविधान में यह प्रावधान है कि लोकसभा में राज्यों को उनकी जनसंख्या की अनुपात में सीट आवंटित की जानी चाहिए तथा प्रत्येक राज्य के निर्वाचन क्षेत्र की जनसंख्या लगभग समान होनी चाहिए, इसमें यह भी अनिवार्य है कि प्रत्येक जनगणना के बाद निर्वाचन क्षेत्र का पुनर्निर्धारण (परिसीमन) किया जाए। इसके आधार पर केंद्र सरकार की ओर से संसद में परिसीमन विधेयक 2026 पेश किया गया, जिसके द्वारा लोकसभा और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं और सीटों की संख्या को 2027 की जनगणना के आधार पर पुनर्गठित किया जाना है।

16 अप्रैल 2026 को लोकसभा में तीन बिल पेश किए गए- एक, संविधान का 131 वां संशोधन बिल 2026, केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन) बिल 2026 और परिसीमन बिल 2026 यह बिल लोकसभा के आकार, सीटों की संख्या को बढ़ाते हैं तथा 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन का रास्ता साफ करते हैं क्योंकि संविधान में यह निर्दिष्ट है कि प्रत्येक जनगणना के बाद परिसीमन किया जाएगा और यह परिसीमन उसी जनगणना पर आधारित होगा। यह संविधान संशोधन बिल संसद को यह निर्धारित करने के लिए कानून पारित करने का अधिकार देता है कि परिसीमन कब किया जाए और किस जनगणना का उपयोग किया जाए। एक अलग परिसीमन बिल 2026 में यह प्रावधान है कि परिसीमन आयोग के गठन की तारीख तक प्रकाशित नवीनतम जनगणना का उपयोग किया जाएगा,

इसका तात्पर्य यह है कि अगले परिसीमन के लिए 2011 की जनगणना का उपयोग किया जाएगा और इसी परिसीमन के आधार पर महिलाओं के लिए आरक्षण को लागू करने का प्रावधान करते हैं।

1976 में 42 वे संवैधानिक संशोधन के माध्यम से लोकसभा में प्रत्येक राज्य की कुल सीटों की संख्या और राज्य विधानसभा में कुल सीटों की संख्या 1971 की जनगणना के आधार पर स्थिर कर दी गई थी। शुरू में यह रोक 2000 के बाद पहली जनगणना के प्रकाशन तक लागू थी, बाद में 84 वे संवैधानिक संशोधन में इस रोक को 2026 के बाद पहली जनगणना के प्रकाशन तक बढ़ा दिया, जो राज्यों को प्रोत्साहित करने का एक कदम था ताकि वह जनसंख्या को स्थिर करने के अपने एजेंडा को प्रभावी तरीके से आगे बढ़ा सकें।

2023 में 106 वे संवैधानिक संशोधन (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) के अंतर्गत लोकसभा और विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की गई, यह आरक्षण 2023 के कानून के लागू होने के बाद पहली जनगणना के आधार पर प्रभावी होगा, संविधान संशोधन बिल इस अनिवार्यता को हटाता है। जो सरकार के लिए सुलभ और आगामी लोकसभा चुनावों के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है। यही असमानता तथा महिला आरक्षण को परिसीमन विधेयक के साथ जोड़ना विपक्ष को रास नहीं आया क्योंकि यह आरक्षण 2023 के कानून के लागू होने के बाद वास्तविक रूप से होने वाली पहली जनगणना पर आधारित है तथा वर्तमान में चल रही जनगणना के लिए संदर्भित तिथि 1 मार्च, 2027 तय की गई है।

चूंकि अगले लोकसभा चुनाव 2029 में होंगे, इसलिए यह सम्भावना कम ही है कि 2027 की जनगणना के आधार पर परिसीमन प्रक्रिया 2029 के चुनावों से पहले पूरी हो पाएगी। इसका अर्थ यह होगा कि 2029 के लोकसभा चुनावों में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू नहीं होगा, इसके लिए भी महिला आरक्षण को परिसीमन बिल के साथ जोड़ने के पर्याप्त कारण सरकार के पास हैं।

परिसीमन का उद्देश्य किसी भौगोलिक क्षेत्र में निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण ही केवल नहीं है बल्कि जनसंख्या के अनुपात में सभी क्षेत्रों को न्याय पूर्ण प्रतिनिधित्व और लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य सुनिश्चित करने के लिए तथा जनसंख्या परिवर्तन, शहरीकरण और पलायन जैसे कारकों के अनुसार निर्वाचन क्षेत्रों की असमान स्थितियां बदलकर किसी निर्वाचन क्षेत्र में अत्यधिक या अत्यंत जनसंख्या का आसमान प्रतिनिधित्व ना हो और सभी क्षेत्रों में जनसंख्या के अनुपात में न्याय पूर्ण प्रतिनिधित्व मिल सके, इसकी सुनिश्चितता का ही एक पर्याय है। वर्तमान परिसीमन बिल के अनुसार लोकसभा में सीटों की कुल संख्या को बढ़ाकर 850 तक किया जाना प्रस्तावित है, जो वर्तमान में 550 की अधिकतम सीमा पर है, जिसमें 850 में से 815 राज्यों के लिए और 35 सीटें केंद्र शासित प्रदेशों के लिए हो जाएंगी। इसके साथ ही संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटों को भी सुनिश्चित करना बिल का उद्देश्य है, जो प्रत्येक राज्य की जनसंख्या के अनुपात में लोकसभा सीट निर्धारित करेगा।

संविधान संशोधन बिल प्रत्येक राज्य में उसकी जनसंख्या के अनुपात में सीटों के सिद्धांत को अंगीकृत करता है। इसका तात्पर्य यह है कि सभी राज्यों में लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों की जनसंख्या लगभग समान होगी, परंतु दक्षिण भारतीय राज्यों ने इसका विरोध इस आशंका के साथ किया कि परिसीमन होने से उत्तर भारत विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान में जनसंख्या के आधार पर लोकसभा सीटें बढ़ेंगी, जबकि दक्षिण भारत के राज्य, जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण में बेहतर काम किया है, उनकी सीटें घट सकती हैं या स्थिर रह सकती हैं। इससे संसद में उत्तर भारत की ताकत बढ़ेगी। भारत में उत्तर-दक्षिण की राजनीति हमेशा से ही प्रतिस्पर्धी रही है, ऐसे में उत्तर भारत में भाजपा का मजबूत आधार लोकसभा में सीटों का प्रतिनिधित्व बढ़ने से उसे और मजबूती प्रदान करेगा। ऐसे में वहीं विपक्षी दलों ने ओबीसी और दलितों के प्रतिनिधित्व को लेकर परिसीमन से पहले देश में जाति आधारित जनगणना कराए जाने को लेकर इस विधेयक के विरुद्ध ही रहा ।

इन सभी विरोधाभास के चलते इस विधेयक को केवल 298 सांसदों का ही समर्थन मिला, जबकि 230 सांसदों ने इसके विरोध में मतदान किया। हालांकि यह विधेयक के पारित होने के लिए पर्याप्त नहीं था। कुल 528 सदस्यों ने मतदान किया, जबकि विधेयक को अनिवार्य दो-तिहाई बहुमत प्राप्त करने के लिए कम से कम 352 मतों की आवश्यकता थी, जो मोदी सरकार के लिए पहला बड़ा विधायी झटका माना गया, जहां वे संवैधानिक संशोधन के लिए आवश्यक संख्या बल नहीं जुटा पाए।

●●●

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय का मंच और भारतीय सभ्यता की समग्र ज्ञान दृष्टि: इन दोनों का संगम एक नई वैश्विक चेतना की ओर संकेत करता है। यदि इस संवाद को आगे बढ़ाया जाए तो यह न केवल भारत के लिए बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक संतुलित, समावेशी और टिकाऊ भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

नवाचार के साथ विवेक भी आवश्यक - दत्तात्रेय होसबले

स्टैनफोर्ड विवि के थ्राइव सम्मेलन, 2026 में, रा. स्व. संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले ने विज्ञान, ज्ञान-प्रणालियां एवं सभ्यतागत नेतृत्व पर अपने भाषण में भारतीय अवधारणाओं के वैश्विक अभिमुख को प्रमुखता दी। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय, नैतिक तकनीक, प्रकृति के सम्मान और भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राविवेक (विजडम) की भूमिका को प्रखरता से उच्चारा। उन्होंने कहा कि विवेकहीन ज्ञान अहंकार और दंभ को जन्म देता है, जबकि विवेकयुक्त ज्ञान ही वास्तविक कल्याणकारी होता है। यह विचार आज के डेटा-ड्रिवन युग में अत्यंत प्रासंगिक है, जहां जानकारी की अधिकता है, परंतु उसके सही उपयोग के लिए आवश्यक नैतिक मार्गदर्शन का अभाव दिखाई देता है। स्टैनफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में 'थ्राइव 2026' सम्मेलन में विज्ञान और अध्यात्म के संगम पर अपनी बात कहते समय उन्होंने दृढ़ता से कहा कि नवाचार के साथ विवेक भी परम आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में भारतीय प्राचीन ज्ञान की प्रासंगिकता, सटीकता व स्थायित्व की चर्चा व उसकी चिरंतन उपयोगिता को स्थापित करना वर्तमान समय में आवश्यक दुस्साहस है। विज्ञान और सभ्यता के मूल्यों की संयुक्त स्थापना हेतु वैश्विक स्तर पर प्रयासरत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से दिया गया यह सम्भाषण, विवेकानंद जी के 'शिकागो सम्भाषण' का ही एक समयानुरूप आंशिक वाचन है।

डॉ. प्रवीण दाताराम गुगनानी

नोबेल लारेट प्रो. स्टीवन चू और पूर्व अमेरिकी सुरक्षा सलाहकार एचआर मैकमास्टर, गूगल के बोर्ड डायरेक्टर श्रीराम जी, वैश्विक निवेशक विनोद खोसला जैसे दिग्गजों की उपस्थिति में दत्तात्रेय जी का यह व्याख्यान भारतीय मान्यताओं का 'वैश्विक चार्टर' है। होसबले जी का सिलिकॉन वैली में भारतीय संस्कृति, दृष्टि, ज्ञान संचय का उल्लेख कोई नव प्रयोग नहीं है। यह हमारा पीढ़ीगत युगीन दायित्व व क्रम रहा है, जिसे उन्होंने ने व्यक्त किया है।

होसबले जी ने कहा कि भारतीय परम्परा में विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक हैं। उपनिषद जैसे ग्रंथ इस समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहां मानव चेतना, प्रकृति और ब्रह्माण्ड के सम्बंधों का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है।

यदि इस तेजी में विवेक और नैतिकता का समावेश न हो तो प्रगति असंतुलित हो सकती है। भारतीय परम्परा धीरे चलो, पर सही दिशा में चलो की चेतना भी देती है ताकि विकास और संतुलन साथ-साथ चलें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि विदेशी आक्रमणों और परतंत्रता के कारण भारतीय ज्ञान-परम्पराओं को गहरी क्षति पहुंची। यह तथ्य केवल अतीत की पीड़ा का वर्णन नहीं बल्कि वर्तमान के लिए एक चेतावनी भी है कि यदि

ज्ञान का संरक्षण और पुनर्पाठ नहीं किया गया तो सभ्यतागत विरासत विस्मृति में खो सकती है। आज भारत में नई शिक्षा नीति व भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से इस ज्ञान को पुनर्जीवित करने का प्रयास उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत की चिरंतन गति, मति, चिति, गीति, गेयता को ही आज विश्व एल्गोरिद्म कह रहा है। होसबले जी ने विधिक ढांचे, वैज्ञानिक प्रणालियों को मनुष्य जीवन, जीविका और कल्याण के लिए कार्यरत रहने को ही 'मानवीय एल्गोरिद्म' बताया और कहा कि मनुष्य इन मशीनी, तकनीकी प्रणालियों का दास नहीं अपितु नियंता बने, यह ही हमारे मानवीय एल्गोरिद्म का मूल तत्व है। ज्ञान के लोकतंत्रीकरण पर भी उन्होंने विशेष बल दिया।

स्टैनफोर्ड विवि, जिसे नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्टार्टअप संस्कृति और वैज्ञानिक शोध का वैश्विक केंद्र माना जाता है, वहां भारतीय सभ्यता की समन्वित ज्ञान दृष्टि का प्रस्तुत होना अपने आप में एक वृहद प्रतीकात्मक महत्व रखता है। एक ओर यह स्थान आधुनिक विज्ञान की तीव्रतम प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है, तो दूसरी ओर होसबले जी का वक्तव्य उस परम्परा को सामने लाता है जहां विज्ञान और अध्यात्म परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक ही सत्य के दो आयाम हैं। यही वह बिंदु है जहां स्थान और संदेश का गहरा अंतरसम्बंध स्थापित होता है। आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान के मध्य कोई कृत्रिम विभाजन नहीं है। उपनिषदों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि ये केवल धार्मिक लेखन नहीं अपितु मानव चेतना, शरीर-रचना, मनोविज्ञान और अस्तित्व के गूढ़ प्रश्नों पर गहन वैज्ञानिक विमर्श है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बायोटेक्नोलॉजी, डिजिटल अर्थव्यवस्था आदि समूचे विश्व को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे में यदि इन तकनीकों के विकास में भारतीय परम्परा की 'प्रकृति के साथ संतुलन' एवं 'ज्ञान के लोकतंत्रीकरण' की अवधारणा को शामिल किया जाए, तो यह वैश्विक स्तर पर स्थाई विकास(सस्टेनेबल डेवलपमेंट) का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। विज्ञान और अध्यात्म के मध्य अनिवार्य पुरकता के भारतीय तथ्य को स्वीकारना ही होगा। दत्तात्रेय जी द्वारा अमेरिका में व्यक्त यह व्याख्यान ऐसे समय में आया है जब विश्व नई दिशा की खोज में है। संघ के शताब्दी वर्ष में वैश्विक प्रवास अंतर्गत तीन देशों जर्मनी, इंग्लैंड और केलिफोर्निया (अमेरिका) में संघ नेतृत्व के ये प्रवास बहुत से प्रतीक व एक बड़े नरेटिव को निर्मित करते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

मल्लखम्ब, बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। आधुनिक युग में जहां बच्चे मोबाइल, वीडियो गेम और गैजेट्स में खोए हुए हैं, मल्लखम्ब उन्हें शारीरिक श्रम, संतुलन और सहनशक्ति का महत्व सिखाकर एक स्वस्थ एवं सक्रिय जीवनशैली की ओर प्रेरित कर सकता है।

मल्लखम्ब
बच्चों को सशक्त बनाती प्राचीन कला

भारत की प्राचीन खेल विरासत में मल्लखम्ब का विशेष स्थान है। यह खेल, जो कभी पहलवानों को बल और चपलता प्रदान करने के लिए विकसित किया गया था, आज बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। खम्भे या रस्सी पर योगासन और कसरत करने की यह कला न सिर्फ शरीर को सुडौल बनाती है बल्कि मानसिक शक्ति और आत्मविश्वास को भी असीम ऊंचाइयां प्रदान करती है।

शारीरिक लाभः सम्पूर्ण शरीर की कसरत

मल्लखम्ब को सम्पूर्ण शरीर की कसरत कहा जाता है क्योंकि यह शरीर के हर अंग को कम से कम समय में इष्टतम व्यायाम प्रदान करता है। जब बच्चा खम्भे पर लटकता है, चक्कर लगाता है और विभिन्न मुद्राओं में खुद को ढालता है तो उसके शरीर की प्रत्येक कोशिका सक्रिय हो जाती है। इस निरंतर मरोड़ और गति के कारण पूरे शरीर की मालिश होती है और हर कोशिका का कायाकल्प होता है। विशेषज्ञों के अनुसार मल्लखम्ब से बाहरी मांसपेशियां तो विकसित होती ही हैं, साथ ही आंतरिक अंगों की कार्यक्षमता भी बढ़ती है। इस खेल को करने वाले बच्चों की सहनशक्ति (स्टैमिना) असाधारण रूप से बढ़ जाती है। बच्चों को अपने शरीर के बल पर ही खुद को संभालना होता है- इसमें कोई फैंसी ट्रिक्स या अतिरिक्त उपकरण नहीं होते। यही चीज इसे इतना प्रभावी और चुनौतीपूर्ण बनाती है।

मानसिक विकासः एकाग्रता से आत्मविश्वास तक

मल्लखम्ब का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह मन और शरीर के बीच गहरा संतुलन स्थापित करता है। खम्भे पर संतुलन बनाने और विभिन्न मुद्राओं में स्थिर रहने के लिए अत्यधिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इस नियमित अभ्यास से बच्चों की स्मरणशक्ति और पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

इस खेल से श्वास पर नियंत्रण, मस्तिष्क की कार्यप्रणाली, स्मरण शक्ति, एकाग्रता और शारीरिक समन्वय सभी बेहतर होते हैं।

आत्मविश्वास और व्यक्तित्व में परिवर्तन

दादर के कमला मेहता स्कूल फॉर द ब्लाइंड की दृष्टिहीन छात्राओं के लिए मल्लखम्ब वरदान सिद्ध हुआ है। इन बच्चियों में रस्सी मल्लखम्ब सीखने के बाद जबरदस्त बदलाव आया। जो बच्चियां पहले शर्मीली और आत्मविश्वास में कमी थीं, वे अब कक्षा में अधिक चौकस हैं और उनके अंकों में भी काफी सुधार हुआ है। आदिवासी बच्चों के लिए भी मल्लखम्ब परिवर्तन का माध्यम बना है। दादरा और नगर हवेली के खानवेल गांव में जहां बच्चे पहले धान के खेतों में खेलते थे, वहीं आज वे खेलो इंडिया जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में भाग ले रहे हैं।

मल्लखम्ब केवल एक खेल नहीं है; यह जीवन कौशल सिखाने वाली एक कला है। यह बच्चों को गिरकर फिर उठना सिखाती है, उनके शरीर पर विश्वास करना सिखाती है और उनकी सहज प्रवृत्तियों को सुनने की क्षमता विकसित करती है। जहां आज के दौर में बच्चे स्क्रीन और गैजेट्स में खोए हुए हैं, वहीं मल्लखम्ब उन्हें एक ऐसा अनुशासन प्रदान करता है जो शरीर को मजबूत, मन को शांत और आत्मविश्वास को असीम बनाता है। जैसा कि एक युवा मल्लखम्ब साधक ने कहा, अभ्यास से लचीलापन आता है और भीतर का डर समाप्त हो जाता है। यही वह शक्ति है जो मल्लखम्ब को आज के समय की सबसे मूल्यवान विरासतों में से एक बनाती है- एक ऐसा खजाना जो हर बच्चे तक पहुंचाया जाना चाहिए।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

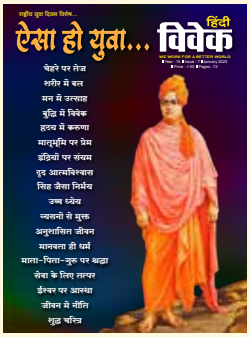

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

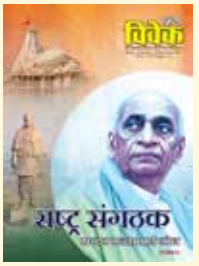

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

भारतीय कला पुरोधा राजा रवि वर्मा

भारतीय कला के क्षितिज को नई दिशा देने वाले महान चित्रकार राजा रवि वर्मा के जन्मदिन पर हम उनकी अमर विरासत को स्मरण करते हैं। उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं एवं रामायण-महाभारत के पात्रों को यथार्थवादी शैली में अद्भुत जीवंतता प्रदान की।

2026 का अप्रैल महीना भारतीय कला इतिहास में स्वर्णिम महीना के रूप में वर्षों तक याद किया जाएगा क्योंकि भारतीय कला पुरोधा राजा रवि वर्मा द्वारा 130 वर्ष पहले (1890 ई.) सृजित कलाकृति 'माता यशोदा और बालगोपाल कृष्ण' भारत की सबसे महंगी बिकने वाली कलाकृति बन गई। 167.2 करोड़ रुपए में सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के साइरस पूनावाला ने मुंबई के नीलामी में इसे खरीदकर भारत की अब तक की सबसे महंगी पेंटिंग का दर्जा दे दिया। इसके पहले भारत की सबसे महंगी पेंटिंग का रिकॉर्ड एम. एफ. हुसैन की कलाकृति 'ग्राम यात्रा' करीब 118.7 करोड़ में बिकी थी। हालांकि अक्टूबर 2007 में एक नीलामी में उनके द्वारा सृजित ऐतिहासिक कलाकृति जिसमें त्रावनकोर के राजा के साथ उनके भाई को मद्रास के गवर्नर जनरल रिचर्ड टेंपल ग्रेनविले का स्वागत करते दर्शाया गया है ऊंचे दाम में नीलामी में बिका था।

मनोज कुमार बच्चन

आधुनिक भारतीय कला के जनक राजा रवि वर्मा का जन्म 19 अप्रैल 1848 ई. में केरल के एक छोटे से नगर किलिमानूर के क्षत्रिय परिवार में हुआ। कला में उनकी अभिरुचि को देखते हुए कला की प्रारम्भिक शिक्षा चाचा राज रवि वर्मन ने दी। शुरुआती दौर में उन्होंने तंजोर कला में महारत प्राप्त की। 14 वर्ष की आयु में तिरुवनंतपुरम के राज घराने में यूरोपीय तेल रंग मध्यम (तकनीक)की शिक्षा ग्रहण कर सिद्धहस्त हुए।

भारत में 20वीं शताब्दी समय के हिसाब से काफी प्रगतिशील रहा है। कला में मिथिकीय चरित्रों के रूपांकन से लेकर पुनरुत्थानवादी अवधारणा की अभिव्यक्ति का प्रश्न हो या फिर यथार्थ को निरूपित करने की पद्धति का विकास हो, यह दौर सर्वथा उल्लेखनीय रहा है। इस सदी में भारतीयकला कला में प्रयोगधर्मिता के अनेक आयाम हैं, जो एक ओर राजा रवि वर्मा से जुड़ते है तो दूसरी ओर अमृता शेरगिल से जुड़ते है और इसके बाद नंदलाल बोस

जैसे कलाकार आते हैं।

राजा रवि वर्मा ने रंग मध्यम मे यूरोपीय यथार्थवादी चित्रण पद्धति को आत्मसात कर भारतीय पुराख्यानों एवं संस्कृति के विभिन्न पात्रों को अपने चित्र फलक पर स्थान दिया। कला के भिन्न-भिन्न विधाओं को जानने हेतु मैसूर, बड़ौदा एवं देश के विभिन्न भागों का भ्रमण किया। उन्होंने जहां हिंदू महाकाव्य-रामायण, गीता आदि धर्मग्रंथों से प्रेरणा पाकर अनेकों कलाकृतियों का सृजन किया, वहीं पुराणों की कहानियों यथा शकुंतला का जन्म, जटायु हत्या एवं सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र इन डिस्ट्रेस जैसी प्रसिद्ध कलाकृतियों का सृजन कर भारतीय जनमानस को अप्रतिम उपहार दिया।

भारत में आधुनिक कला के सूत्रधार इस कलाकार में ही केवल पश्चिमी तकनीक की अधिकता नहीं थी, उन दिनों मुंबई और कलकत्ता में भी इस शैली का प्रभाव व्याप्त था। चेन्नई के लॉर्ड की भी इच्छा यही थी कि भारतीय कलाकार पश्चिम का प्रभाव लेकर अपने पुराख्यानों को चित्रित करें। राजा रवि वर्मा ने कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम के दृश्य चित्र में शकुंतला को विशेष भाव भंगिमाओं के साथ चित्रित किया है। वहीं प्रेम उत्सुकता को दर्शाती दमयंती और हंस का चित्रण प्रभावशाली ढंग से किया है। समुद्र मंथन के बाद मोहिनी के चित्रण में एक आकर्षण है जो प्रेक्षकों को सम्मोहित करता है। उनके एक चित्र में चांदनी रात में महिला का चित्र भावनात्मक चित्र है जो प्रेक्षकों को अलग दुनिया में ले जाता है। ऐतिहासिक पात्र भीष्म पितामह का सजीव चित्रण तथा अर्जुन एवं सुभद्रा के चित्रण में प्रेम एवं बहादुरी का अद्भुत चित्रण किया गया है। 1894 ई. में उन्होंने मुंबई में एक लिथोग्राफी प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की, जिससे सामान्य लोग भी उनकी कलाकृतियों को सस्ते कीमत में खरीदकर अपने घरों में लगा सके।

इससे इतर राजा रवि वर्मा ने विद्या की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी एवं शिव परिवार का बखूबी चित्रण किया, जिसने भारतीय जनमानस में अमिट छाप छोड़ा है। इससे इतर इनकी कलाकृतियों के पारम्परिक परिधान साड़ी की नकल कर एक साड़ी का निर्माण किया गया जो दुनिया की सबसे महंगी साड़ी थी, जो 40 लाख में बिकी और लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुई।

1873 ई. में नायर लेडी एडोर्निंग हर हेयर नामक कलाकृति के लिए उन्हें वियना की प्रदर्शनी में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। राजा रवि वर्मा पर केतन मेहता ने अंग्रेजी में 'कलर ऑफ पेशेंस' और हिंदी में 'रंगरसिया' फिल्म बनाई, जो काफी चर्चित रही। बड़ोदरा स्थित लक्ष्मी विलास महल संग्रहालय में इनके द्वारा सृजित ऐतिहासिक कलाकृति बहुत बड़ी संख्या में संग्रहित है। इससे इतर देश-विदेश की कला दीर्घाओं एवं निजी संग्राहकों के पास इनकी कलाकृति संग्रहित हैं। महज 58 वर्ष की छोटी सी आयु में उनका देहावसान हो गया, पर भारतीय आधुनिक कला का ये सितारा अपने द्वारा सृजित कलाकृतियों के माध्यम से भारतीय जनमानस के चितेरे रूप में हमेशा छाया रहेगा। उनकी कला का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने भारतीय जनमानस के लिए देवी-देवताओं के दृश्य स्वरूप को सार्वभौमिक एवं सुलभ बनाया। लिथोग्राफी तकनीक के माध्यम से उनकी कृतियां आम घरों तक पहुंचीं, जिससे कला जन-जन की अभिव्यक्ति बन गई। उन्होंने भारतीय परम्परा और पाश्चात्य यथार्थवादी तकनीक का अद्वितीय सम्मिलन कर एक नई दृष्टि प्रदान की। रवि वर्मा के बिना आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास अधूरा है। उनकी यही विरासत आज भी प्रत्येक कला प्रेमी को प्रेरणा देती है।

●●●

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का वैश्विक संदेश

राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज का जीवन एक प्रेरणा है- एक ऐसा उदाहरण, जिसमें आध्यात्मिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा संत वही है, जो समाज के लिए कार्य करे और राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे।

लवकुश तिवारी

भारत की संत परम्परा केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं रही बल्कि उसने समाज, राष्ट्र और मानवता के समग्र उत्थान का मार्ग भी प्रशस्त किया है। इसी परम्परा के एक उज्ज्वल नक्षत्र थे राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज- एक ऐसे संत, जिन्होंने भक्ति, सेवा और राष्ट्रनिर्माण को एक सूत्र में पिरोकर अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका जीवन केवल धार्मिक उपदेशों तक सीमित नहीं था बल्कि वह सामाजिक सुधार, ग्राम विकास, राष्ट्रीय चेतना और वैश्विक मानव एकता के सशक्त वाहक थे।

प्रारम्भिक जीवन और आध्यात्मिक जागरण

तुकडोजी महाराज का जन्म 30 अप्रैल 1909 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले के यावली गांव में हुआ। उनका मूल नाम माणिकदेव था। बाल्यकाल से ही उनमें आध्यात्मिक प्रवृत्ति और संगीत के प्रति गहरा आकर्षण था। उन्होंने कम आयु में ही भजन-कीर्तन के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलानी शुरू कर दी थी। उनका जीवन साधना, सेवा और समर्पण का पर्याय बन गया। उनकी आध्यात्मिक साधना केवल व्यक्तिगत मोक्ष तक सीमित नहीं थी बल्कि वे मानते थे कि सच्चा धर्म वही है जो समाज के कल्याण में योगदान दे। यही कारण है कि उन्होंने भक्ति को कर्म से जोड़ा और एक सक्रिय संत के रूप में उभरे।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

तुकडोजी महाराज केवल संत ही नहीं बल्कि एक सच्चे राष्ट्रभक्त भी थे। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और अपने भजनों तथा प्रवचनों के माध्यम से जनमानस में स्वतंत्रता की चेतना जागृत की। उनके कीर्तन लोगों में देशभक्ति का ज्वार उत्पन्न करते थे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने 'ग्राम स्वराज' की अवधारणा को आगे बढ़ाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्र की सच्ची शक्ति गांवों में निहित है और यदि गांव आत्मनिर्भर बनेंगे तो देश स्वतः सशक्त होगा।

'ग्रामगीता'-एक युगांतरकारी कृति

तुकडोजी महाराज की सबसे प्रसिद्ध रचना 'ग्रामगीता' है, जिसे ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण का मार्गदर्शक ग्रंथ माना जाता है। इसमें उन्होंने ग्राम विकास, स्वच्छता, शिक्षा, श्रम, नैतिकता और सामाजिक एकता पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किए। 'ग्रामगीता' केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है, जो आज भी ग्रामीण विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि- गांव का विकास ही राष्ट्र का विकास है।

सामाजिक सुधार और जनजागरण

तुकडोजी महाराज ने समाज में व्याप्त कुरीतियों- जैसे छुआछूत, अंधविश्वास, मद्यपान और अशिक्षा- के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाया। उन्होंने अपने भजनों और प्रवचनों के

माध्यम से लोगों को जागरूक किया और समाज को एक नई दिशा दी। उन्होंने 'गुरुदेव सेवा मंडल' की स्थापना की, जो आज भी ग्रामीण विकास, शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है। उनके प्रयासों से हजारों गांवों में स्वच्छता अभियान, श्रमदान और सामुदायिक विकास की भावना विकसित हुई।

राष्ट्रीय संत की उपाधि

उनके अद्वितीय योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 'राष्ट्रीय संत' की उपाधि से सम्मानित किया। यह केवल एक सम्मान नहीं था बल्कि उनके कार्यों की व्यापकता और प्रभाव का प्रमाण था।

वैश्विक दृष्टिकोण और मानवता का संदेश

तुकडोजी महाराज का दृष्टिकोण केवल भारत तक सीमित नहीं था। वे सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानते थे। उन्होंने विश्व शांति, नैतिकता और मानव एकता का संदेश दिया। उनके विचार आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में और भी अधिक प्रासंगिक हैं, जब दुनिया विभाजन, संघर्ष और असमानता की चुनौतियों से जूझ रही है। वे मानते थे कि धर्म का उद्देश्य विभाजन नहीं बल्कि एकता स्थापित करना है। उनका यह संदेश आज के अंतरराष्ट्रीय समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

पर्यावरण और सतत विकास की सोच

आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संकट से जूझ रही है, तुकडोजी महाराज के विचार अत्यंत दूरदर्शी प्रतीत होते हैं। उन्होंने प्रकृति के संरक्षण, स्वच्छता और संतुलित जीवनशैली पर जोर दिया। उनके ग्राम विकास मॉडल में पर्यावरणीय संतुलन को विशेष महत्व दिया गया था।

आज के संदर्भ में प्रासंगिकता

तुकडोजी महाराज के विचार आज के युग में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

* ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता
* सामाजिक समरसता
* नैतिक जीवन
* पर्यावरण संरक्षण
* राष्ट्रप्रेम और वैश्विक एकता

ये सभी विषय आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने उनके समय में थे। उनका संदेश सीमाओं से परे है- यह केवल भारत के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है। आज जब दुनिया को एक नए नैतिक और सामाजिक दिशा की आवश्यकता है, तुकडोजी महाराज के विचार एक प्रकाश स्तम्भ की तरह मार्गदर्शन कर सकते हैं। उनकी वाणी, उनके कार्य और उनकी 'ग्रामगीता' आज भी हमें यह सिखाती है कि सच्चा विकास केवल भौतिक प्रगति में नहीं बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति में निहित है। यही उनके जीवन का सार है और यही उनकी सबसे बड़ी विरासत।

पहलवान से पार्श्वगायक तक
मन्ना डे की कहानी

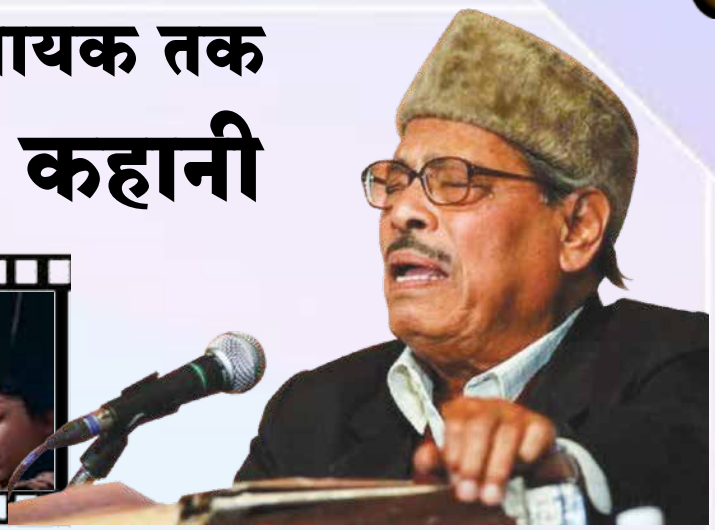

स्वर सम्राट, संगीत के तपस्वी और भारतीय सिनेमा के सबसे बहुमुखी पार्श्वगायकों में से एक- ये सारे शब्द छोटे पड़ जाते हैं उस महान कलाकार के सामने जिसे हम मन्ना डे के नाम से जानते हैं। 1 मई, 1919 को कोलकाता में जन्मे प्रबोध चंद्र डे ने संगीत की उस ऊंचाई को छुआ, जहां केवल कला के प्रति समर्पण ही पहुंचा सकता है। उनके जन्मदिन के अवसर पर हम उस महान व्यक्तित्व को याद करते हैं, जिन्होंने अपनी गायकी से शास्त्रीय और सरल संगीत के बीच की दूरी को मिटाया और सदियों तक याद रखे जाने वाले गीतों की रचना की।

अपनी सुरीली आवाज से लाखों दिलों को लुभानेवाले मन्ना डे के गीत आज भी सभी को रोमांचक कर देते हैं। पद्मश्री, पद्मभूषण और दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित इस संगीत साधक का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची कला का सम्मान कभी कम नहीं होता और उसकी गूंज सदियों तक सुनाई देती है।

प्रारम्भिक जीवन और संगीत की नींव

कोलकाता के सिमला क्षेत्र में 9 मदन घोष लेन स्थित उनके पैतृक निवास से शुरू हुआ यह सफर बेहद दिलचस्प रहा। उनके चाचा संगीताचार्य कृष्ण चंद्र डे ने ही इस कच्ची मिट्टी को गढ़ा। कृष्ण चंद्र डे स्वयं एक दृष्टिहीन संगीतकार थे, पर उनका संगीत ज्ञान अपार था। उन्होंने ही मन्ना डे को संगीत की बारीकियां सिखाईं। एक रोचक तथ्य यह है कि मन्ना डे को शुरूआत में संगीत के प्रति उतना लगाव नहीं था जितना कि कुश्ती और मल्लयुद्ध से था। वे मशहूर पहलवान गोबर गुहा के शिष्य थे और एक बार अखिल भारतीय पहलवानी प्रतियोगिता के फाइनल तक पहुंच चुके थे। उन्होंने अपनी किशोरावस्था में कुश्ती और मुक्केबाजी में भी हाथ आजमाया। यह अद्भुत संगीतकार बाद में कहता था कि संगीत और कुश्ती, दोनों में ही ताल और लय की अपनी महत्ता होती है। उनका पहला गीत 'जागो आई उषा' (तमन्ना, 1942) था, जो सुरैया के साथ युगल गीत था, परंतु असल पहचान उन्हें 1950 में मिली, जब एस. डी. बर्मन ने उनका पहला एकल गीत 'ऊपर गगन विशाल' (मशाल) रिकॉर्ड करवाया। इस गीत ने उनके संघर्ष के दिनों को समाप्त किया और उनके भविष्य का दरवाजा खोला। उन्होंने लगभग 3,500 से अधिक गीत रिकॉर्ड करवाए, जो हिंदी, बंगाली, असमिया, मराठी, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, पंजाबी और भोजपुरी सहित 14 भारतीय भाषाओं में हैं।

शास्त्रीय संगीत का जादूगर और सफलता की कहानी

मन्ना डे को यूं तो मोहम्मद रफी, मुकेश और किशोर कुमार के बीच चौथा मुकाम दिया जाता था, पर भारतीय संगीत में उनका योगदान अतुलनीय है। वे 'लगा चुनरी में दाग' जैसे अर्धशास्त्रीय गीतों के लिए आज भी याद किए जाते हैं। राज कपूर, शंकर-जयकिशन और मन्ना डे की जोड़ी ने कई अमर गीत दिए। 'ये रात भीगी भीगी', 'आजा सनम', 'प्यार हुआ इकरार हुआ' जैसे गीतों ने यह सिद्ध कर दिया कि एक गम्भीर शास्त्रीय गायक भी रोमांटिक गीतों को बखूबी गा सकता है।

कॉमेडी से लेकर देशभक्ति तक: बहुमुखी प्रतिभा के धनी: मन्ना डे ने कभी अपने आपको एक विशिष्ट श्रेणी में बंधने नहीं दिया। जहां एक ओर उन्होंने 'एक चतुर्नार' और 'ये दोस्ती' जैसे हास्य और दोस्ती के गीतों को किशोर कुमार के साथ अमर किया, वहीं 'आए मेरे प्यारे वतन' (काबुलीवाला) जैसे देशभक्ति गीतों से पूरे देश की आंखों में आंसू ला दिए। 24 अक्टूबर, 2013 को यह महान स्वर सदा के लिए शांत हो गया, परंतु उसकी गूंज आज भी हर उस श्रोता के दिल में सुनाई देती है जो कभी 'जिंदगी कैसी है पहेली' सुनता है या 'पूछो ना कैसे' की तानों में खो जाता है। मन्ना डे केवल एक गायक नहीं थे, वे एक ऐसे विरासत हैं जिसे भारतीय संगीत सदियों तक सहेज कर रखेगा।

●●●

कॉर्पोरेट जगत में नारी उत्पीड़न व धर्मांतरण के षड्यंत्रों पर लगे लगाम - बजरंग बागड़ा (महासचिव -विहिप)

विश्व हिंदू परिषद के महासचिव बजरंग बागड़ा ने व्यापार और उद्योग से जुड़े शीर्ष निकायों से कॉर्पोरेट जगत में काम कर रही महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की है। उन्होंने फिक्की, सीआईआई, एसोचैम, आईसीसी, बीसीसी, पीएचडीसीआईआई, नैसकॉम जैसे संगठनों को पत्र लिख कर यह अपील की। उन्होंने कॉर्पोरेट जगत से अनुरोध किया है कि वह महिलाओं के लिए सुरक्षित कार्यस्थल का वातावरण बनाकर राष्ट्र को प्रगति की नई ऊंचाइयों तक ले जाए।

साथ ही उन्होंने चेताया कि यदि कॉर्पोरेट जगत की नीतियों और उनके क्रियान्वयन में सुधारात्मक कदमों की कमी पाई गई तो विहिप सभी उपलब्ध संवैधानिक उपायों को अपनाने के लिए विवश होगी। विहिप पूरी निष्पक्षता के साथ ऐसे मामलों पर पैनी दृष्टि रखेगी कि क्या कदम उठाए गए हैं या नहीं उठाए गए हैं। बागड़ा ने उद्योग और व्यापार संगठनों का ध्यान टीसीएस में चल रहे धर्म-परिवर्तन के बड़े षड्यंत्र की ओर दिलाते हुए कहा कि 'शिकारी' की भूमिका में एक विशेष मजहबी समुदाय से जुड़े कुछ पुरुष कर्मचारियों ने दूसरे समुदाय की महिला कर्मचारियों के साथ ही पुरुष कर्मचारियों को भी अपना निशाना बनाया।

उन्होंने कहा कि ये किसी व्यक्तिगत कट्टरपंथी द्वारा किए गए अपराधों के अलग-थलग मामले नहीं हैं बल्कि सुनियोजित, वित्तपोषित और पेशेवर ढंग से योजनाबद्ध तरीके से सामूहिक षड्यंत्र के मामले हैं। टीसीएस, नासिक मामले में उजागर हुए शुरुआती साक्ष्य कट्टरपंथियों और आतंकवादियों के साथ इन आरोपित कर्मियों की सांठगांठ की आशंका और विदेशी फंडिंग की संलिप्तता की ओर संकेत करते हैं। दूसरे मामलों की अभी ठीक से जांच होना बाकी है।

विहिप के महासचिव के अनुसार पीड़ित महिला कर्मचारियों की शिकायतों की अनदेखी की गई। टीसीएस का वरिष्ठ प्रबंधन अपनी सुरक्षित कार्य-स्थल उपलब्ध कराने की जिम्मेदारियों को निभाने में पूरी तरह विफल रहा। प्रबंधन अपनी घोर लापरवाही और कुप्रबंधन के माध्यम से इन अपराधों में मौन भागीदार बन गया। कार्यस्थलों पर महिला कर्मचारियों के यौन उत्पीड़न की रोकथाम से सम्बंधित कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन बड़े पैमाने पर किया गया। उन्होंने कहा कि पूरा देश कॉर्पोरेट क्षेत्र पर गर्व करता है, जिसने अर्थव्यवस्था के विकास और रोजगार सृजन में भारी योगदान देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है, किंतु किस कीमत पर! उन्होंने उम्मीद जताई कि कॉर्पोरेट नेतृत्व इस मामले की गम्भीरता को समझेगा। उन्होंने उद्योग संगठनों से अपील की कि वे अपनी सदस्य फर्मों/कम्पनियों को सलाह दें कि वे एक विशेष मजहबी समुदाय से सम्बंधित उम्मीदवारों की भर्ती और नियुक्ति के समय बहुत सतर्कता बरतें।

बागड़ा ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद चाहती है कि टीसीएस में हुए निंदनीय घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए कॉर्पोरेट जगत की सभी कम्पनियां विशेष रूप से कार्मिक विभाग में की गई भर्तियों की गम्भीर समीक्षा करते हुए तत्काल सुधारात्मक कदम उठाएं। उन्होंने स्पष्ट किया कि विहिप यह नहीं मानती है कि किसी विशेष समुदाय के सभी लोग ऐसे जघन्य अपराधों में शामिल है, परंतु जिस तरह का पैटर्न और व्यापकता सामने आई है, वह निश्चित रूप से अतिरिक्त सावधानी और सतर्कता की मांग करती है। उनके अनुसार भर्ती से लेकर नियुक्ति तक और महिला कर्मचारियों के शोषण को रोकने के लिए सतत निगरानी बहुत आवश्यक है।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

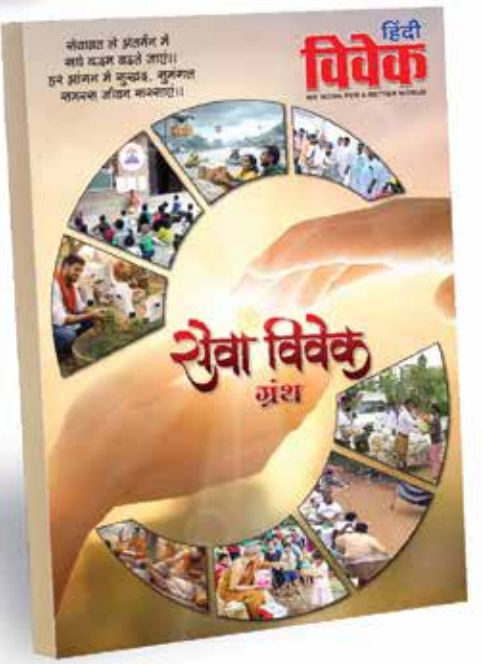

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com